भगत कबीर – सबद १८

ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२६

ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥
दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥१॥ रहाउ ॥
हरी अंगूरी गदहा चरै ॥
नित उठि हासै हीगै मरै ॥१॥
माता भैसा अमुहा जाइ ॥
कुदि कुदि चरै रसातलि पाइ ॥२॥
कहु कबीर परगटु भई खेड ॥
लेले कउ चूघै नित भेड ॥३॥
राम रमत मति परगटी आई ॥
कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥४॥१॥१४॥

सार: वव्यंग्य एक ऐसी हास्य शैली है, जिसका प्रयोजन श्रोताओं को आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करने के लिए प्रेरित करना है। विडंबना और कटाक्ष के माध्यम से सामाजिक नियमों, संस्थाओं या व्यक्तियों की खामियों, राजनीतिक विरोधाभासों और धार्मिक बेतुकेपन को उजागर कर उनका मज़ाक उड़ाया जाता है। भगत कबीर व्यंग्य और रूपकों के माध्यम से मनन को उकसाते हैं और समाज में परिवर्तन की प्रेरणा देते हैं। सजीव कल्पना और व्यंग्यात्मक मोड़ मन को सोचने पर मजबूर करते हैं जिससे उनके संदेश आम लोगों तक आसानी से पहुँच जाते हैं। व्यंग्य के माध्यम से वह समाज के दिखावटीपन को उजागर करते हैं और उनके रूपक आध्यात्मिक अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि व्यक्ति अपने जीवन और आध्यात्मिकता के संबंध पर चिंतन कर सके।

ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥
कबीर कहते हैं कि वह ऐसी विचित्र और अद्भुत चीज़ें देखते हैं।

दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥१॥ रहाउ ॥
अज्ञानता में, मलाई समझकर पानी को मथकर मक्खन बनाया जा रहा है। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि बिना गहन चिंतन के किए गए प्रयास ज्ञान नहीं देते। (१)(विराम)

हरी अंगूरी गदहा चरै ॥
गधा कच्चे हरे अंगूर चरता है। यह प्रतीक है कि सिर्फ़ ज्ञान प्राप्त कर लेने से ही विवेक या परिवर्तन नहीं आता है।

नित उठि हासै हीगै मरै ॥१॥
हर दिन यह जागता है, हँसता है, रेंकता है और फिर मर जाता है। यह आध्यात्मिक मृत्यु का प्रतीक है क्योंकि मन जीवन के अवसरों को स्वीकार करने में असफल रहता है और हर दिन बिना किसी वृद्धि-विकास या जागरूकता के समाप्त हो जाता है। (१)

माता भैसा अमुहा जाइ ॥
एक बेलगाम, नशे में धुत भैंसा बेइंतिहा उछलता रहता है। यह अहंकार से भ्रमित और ज्ञान से भटके हुए मन का प्रतीक है।

कुदि कुदि चरै रसातलि पाइ ॥२॥
उत्साह से उछलता हुआ वह चरता रहता है और गहरे गड्ढे में गिर जाता है। सांसारिक मोह-माया से मोहित होकर मन भौतिकता में उलझ जाता है। (२)

कहु कबीर परगटु भई खेड ॥
कबीर कहते हैं कि खेल प्रकाशित हो गया है। यह दर्शाता है कि आध्यात्मिक अज्ञान की मूर्खता उन लोगों के लिए स्पष्ट हो जाती है जो आत्म-चिंतन करते हैं।

लेले कउ चूघै नित भेड ॥३॥
भेड़ें निरंतर मेमने का दूध पीती हैं। यह उलटी भूमिकाओं और गुमराह पालन-पोषण का एक रूपक है जहाँ अज्ञानी को मार्गदर्शक समझ लिया जाता है, देखभाल के भ्रम में अज्ञानता को बनाए रखा जाता है। (३)

राम रमत मति परगटी आई ॥
सर्वव्यापी जागरूकता में लीन होकर हमारी बौद्धिक संभावनाएँ प्रकट होती हैं। यह दर्शाता है कि विवेक से हम एकत्व को पहचान सकते हैं।

कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥४॥१॥१४॥
कबीर कहते हैं कि उन्होंने यह समझ उस ज्ञान के माध्यम से प्राप्त की है जिसने उन्हें अज्ञान से जागरूकता की ओर निर्देशित किया है। (४)(१)(१४)

तत्त्व: भगत कबीर संसार को संबोधित करते हैं जहाँ अज्ञान को मान्यता दी जाती है और ज्ञान को नज़रअंदाज़ किया जाता है। इस समाज में रीति-रिवाज अक्सर दार्शनिक अंतर्दृष्टि की समझ और अनुभव पर हावी हो जाते हैं। यह मलाई निकालने के लिए पानी को मथने जैसा है, प्रयास तो किया जाता है फिर भी कोई वास्तविक मूल्य प्राप्त नहीं होता। भगत कबीर हमें आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जिससे हम खोखली परंपराओं को त्याग सकें और उन गहन सत्यों के प्रति जागृत हो सकें जो आँखों से अदृश्य रहते हैं लेकिन जागृत मन के लिए स्पष्ट होते हैं। ज्ञान रुपी गुरु चाहे हमारे भीतर हो या बाहरी प्रयासों में, जीवन की विसंगतियों को समझने और स्पष्टता प्राप्त करने की कुंजी रखता है। वह सामाजिक स्वीकृति पर निर्भर रहने के बजाय, इस परिवर्तन को अपनाने और उस सार की खोज करने की सलाह देते हैं जो सतही परंपराओं से दूर है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com